शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

'बालरामायण के राम संस्कृति के दर्पण में'

डा. हितेश कुमार चौरे
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत विभाग
रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.), भारत

शोध संक्षेप

यायावर कविराज राजशेखर नवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध के प्रशस्त कवि, काव्यशास्त्री और रूपककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। काव्यमीमांसा इनका काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है, बालरामायण इनका महानाटक है, दूसरा अपूर्ण नाटक बालभारत है। प्राकृत भाषा में प्रणीत कर्पूरमञ्जरी सट्टक और विद्धशालभंजिका संस्कृत नाटिका है। महानाटक बालरामायण दस अङ्कों में विन्यस्त है। इसमें राम के राज्याभिषेक तक की कथा वर्णित है। प्रस्तुत शोध पत्र में बाल रामायण के राम को संस्कृति के दर्पण में देखने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

संस्कृत-साहित्य के इतिहास में यायावरवंशीय महाकवि राजशेखर ऐसे प्रभाभास्वर प्रोज्ज्वल नक्षत्र है जिनकी यषोविभूति साहित्य के विविध क्षेत्रों को आलोकित करती है। वे साहित्यशास्त्र के महनीय प्रणेता, नाट्यविद्या के परमाचार्य, काव्यछन्द, ज्योतिष, भूगोल इत्यादि विविध विषयों के पारदृष्वा विद्वान् और समग्र भारतीय वाङ्मय के मर्मज्ञ हैं। उनकी प्रतिभा से न केवल साहित्य क्षेत्र ही आलोकित हुआ अपितु उनकी राजनीतिक और प्रशासनिक क्षमता से भारत में एक विशाल भूखण्ड का साम्राज्य भी मार्गनिर्देश प्राप्त कर सुख-समृद्धि के विस्तार का प्रतीक बना। वे न केवल संस्कृत-साहित्य के ही चूड़ान्त विद्वान् थे अपितु प्राकृत भाषाओं के विविध रूपों का भी उन्हें पूर्णतः ज्ञान था और इस पाण्डित्य के आधार पर उनके समकालिक षड्करवर्मा ने उन्हें बाल्मीकि, भर्तृमेण्ठ और भवभूति का अवतार कहा था जिसे स्वयं राजशेखर ने स्वीकृत करते हुए उद्धृत किया है –

'बभूव वल्मीकिभवः कविःस्ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
स्थितः पुनर्यो भवभूतिरेखया स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।।' बालरामायण1/16

संस्कृति

लोक में प्रथमतः हर वस्तु अनगढ रूप में प्राप्त होती है चाहे वह जंगम हो अथवा स्थावर। शिला को गढकर मूर्ति बना दिया जाता है ऊबड़-खाबड़ जमीन को बराबर कर और जोत कर कृषि योग्य बनाया जाता है उसी प्रकार अज्ञ बालक को संस्कारित कर उसे समाज का एक योग्य नागरिक बनाया जाता है। सभ्यता यदि बाह्य है तो संस्कृति आभ्यन्तर। भारतीय संस्कृति वैदिक अथवा आगमिक संस्कृति है। भारतीय सन्दर्भ में धर्म कर्त्तव्य का पर्याय है। भारतीय संस्कृति की दिव्यचेतना से युक्त व्यक्ति विहित कत्र्तव्यों का निर्वाह करता हैं। शबर स्वामी ने कहा है –

'संस्कारो नाम स भवति यस्मिन् जाते पदार्थो भवति कष्चिदर्थः 'इयं योग्यता द्विविधा भवति दोषमुक्तिरूपा गुणाधान रूपा च।' प्रो. अभिराज राजेन्द्रमिश्र भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं –

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

'संस्कारः शास्त्रनिहित क्रियानुष्ठानजन्यो योग्यता विशेषः।' प्रयोगपरिजातकार कहते हैं - संस्कृति से रहित मनुष्य का जन्म निरर्थक होता है –

अतः परंद्विजातीनां संस्कृतिर्नियतोच्यते।
संस्काररहिता ये तु तेषां जन्म निरर्थकम्।।
प्रो. रहसविहारी द्विवेदी ने साहित्यानुसंधानुबोधप्रविधि में सांस्कृतिक शोध के सन्दर्भ में लिखा है –
'समतलीकृता भूमिरन्नदात्री प्रजायते। संस्कृतं प्रस्तरं नूनं मूर्तिरूपेण पूज्यते। दिव्यतामोति संस्कारैस्तद्वत्संस्कृतं मनः। अस्मात्तु संस्कृतिश्चेयं मनसा सर्वमष्नुते। दिव्या चेयं स्वभावेन ह्यतो यत्रास्ति दिव्यता। संस्कृतौ भारतीयायां तदाश्रित्यात्र शोध्यते।। अनुसंधान बो.प्र. पृ. 47, 48

वस्तुतः शास्त्रीय ग्रन्थों में संस्कृति या धर्म का सैद्धान्तिक विवेचन होता है उसी को काव्यकार अपनी रचना के वस्तुविन्यास में प्रायोगिक रूप में प्रस्तुत करते हैं। श्री राम वाल्मीकिरामायण तथा अन्य सभी उत्तरवर्ती रचनाओं में संस्कृति के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किये गए हैं। श्रीराम में उनकी अन्विति: श्रीराम के चरित का आकलन प्रथमतः महर्षि वाल्मीकि में किया। उन्होंने प्रारंभ में ही राम के स्वरूप की रूपरेखा स्वयं प्रस्तुत की है। वे तप और स्वाध्याय में निरत वाग्विदांवर और मुनिपुंगव नारद से अपने महाकाव्य का नायक पूछते हैं किन्तु उनके बताने के पूर्व वे स्वयं अपने समीहित नायक के स्वरूप को बताते हैं –

को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कष्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः।। चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः। विद्वान कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः।। आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः। कस्य बिभ्यति देवाश्य जातरोषस्य संयुगे।। बा.रा., बा.का. 1.2.4

इन्हीं गुणों के आधार पर नारद उन्हें इन गुणों से युक्त नायक के लिए उपर्युक्त श्रीराम को बताते हैं। ध्यातव्य है कि ये वही गुण हैं जिनकी अपेक्षा ऋग्वेद में 'संगच्छध्वं संवधत्वं' 'मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षत्' 'आराष्टे राजन्य षूरइषव्योऽतिव्याधी जायताम् आदि रूप में 'तैत्तीरीय उपनिषद्' में 'सत्यं वद धर्मं चर', 'मातृदेवो भव' आदि रूप में व्यक्त है तथा इनकी ही गणना मनु ने धर्म के घटकों में की है। 1948 ई. में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 30 अनुच्छेदों में जिन मानवाधिकारों की घोषणा की गई है ये सभी मानवीय संस्कृति से सम्बद्ध है। संस्कृत वाङ्मय विशेष रूप से मानवीय कर्त्तव्य (धर्म) की दृष्टि से निरूपण करता है। धर्म और अध्यात्म की संस्कृत वाङ्मय में प्रमुखता रही है। भारतीय अध्यात्म का वैशिष्ट्य यह है कि वह सभी प्राणियों तथा जड़ और चेतन में ईश्वर का वास मानता है। अतः सच्चा आध्यात्मिक भारतीय किसी से घृणा नहीं कर सकता इस प्रकार आध्यात्मिक व्यक्ति स्वतः सांस्कृतिक एवं संवेदनशील होता है। इसी प्रकार धर्म के आधार और उनके घटक भी संवेदनशीलता के प्रेरक हैं - श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतत्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्।।- मनुस्मृति 2.12

ये चार धर्म के आधार है। मनु ने धर्म के घटक इस प्रकार बताए हैं जो मानवमात्र के सामान्य धर्म (कर्त्तव्य) है। 'धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौच मिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।। - मनुस्मृति 6.92

अर्थात् मनु ने धर्म के दस घटक बताये हैं जो इस प्रकार हैं - 1.धैर्य सन्तोष करना, धीरज रखना। 2.क्षमा एवं दया 3.सहनशक्ति (दुःख और सुख) में समान रहना। 4.चोरी न करना। 5.शुचिता (पवित्रता) शरीर, वस्त्र, परिवेश की पवित्रता। 6.धी (प्रज्ञा) धीर्धारणावती मेघा मतिरागामि गोचरा। बुद्धिस्थात्कालिकी प्रोक्ता प्रज्ञा त्रैकालिकी मता।। मेघा (स्मरणशक्ति) मति (भविष्य पर विचार करना) और बुद्धि तत्काल निर्णय लेने की क्षमता) को कहते हैं 'धी' अर्थात् प्रज्ञा, भूत-भविष्य और वर्तमान तीनों का ध्यान रखती है। 7.इन्द्रियनिग्रह - इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना, सुनना,

स्पर्श करना, देखना, स्वाद लेना और गन्ध (भौतिक आनन्द) जो कर्ण, त्वक्, नेत्र, जिह्वा और नासिका से ग्राह्य है इनका विवेक पूर्वक उपयोग या त्याग। 8.विद्या - (अध्ययन) मनुष्य को जिजीविषा के लिए कुछ सीखना पड़ता है। 9.सत्यपरायणता- (सत्यव्यवहार, सत्यवचन ईमानदारी) जैसा कि कहा गया है - क्रोधाद्भवति समोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रम। स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रनीश्यति।।-श्रीमद्भागवद्गीता 2/63

चरित्र-चित्रण

बालरामायण के नायक राम में सभी संभावित आदर्श गुणों का संचय है। वे अत्यन्त विनम्र, क्षमाशील, परदुःखकातर, दुष्ट-दमनकर्ता तथा सच्चारित्र्य के पालक और रक्षक है। राम विष्णु के अवतार या विष्णु हैं और उनका चरित्र धीरोदात्त है। धीरोदात्तं जयति चरितं रामनाम्नश्च विष्णोः। 1/6 शुनःक्षेप के कथन से यह प्रथम अंक में ही स्पष्ट हो जाता है कि राम राक्षसों से रक्षा की औषध हैं - 'राक्षसरक्षौषधं रामभद्रमानेतुं'। - 1/22-23

परशुराम के अत्यन्त क्रुद्ध होने पर भी राम में विनम्रता उच्चकोटि की प्रस्फुटित होती है वे अपना सिर परशुराम के सामने कर देते हैं - स्वायत्तेन कुठारेण स्वाधीने राममूर्धनि। यथेष्टं चेष्टतामार्यस्त्वदाज्ञां को निषेधति।। 4/62 किन्तु विनम्रता के साथ ही साथ उनमें दृढ़ता भी उसी कोटि की है। जब परशुराम युद्ध का हठ करते हैं तो वे उसके लिये भी प्रस्तुत हो जाते हैं। राम की यही विनम्रता समुद्र के प्रति भी दिखाई पड़ती है। जब समुद्र राम के अनुनय पर ध्यान नहीं देता तो राम पौरुष का आश्रय लेकर समुद्र को अग्नि-बाणों द्वारा दग्ध करने पर उद्यत होते हैं, पर जब समुद्र गङ्गा-यमुना के साथ राम के पास विनीत भाव से उपस्थित होते हैं, उस समय श्रीराम उन्हें प्रणाम कर विनम्रता से आदेश देने को कहते हैं - 'भगवन् रत्नाकर नमस्ते। नन्वहं प्रषास्यो भगवतः। 6/36-37 यही विनम्रता और नीति उन्होंने अपने शत्रु रावण के प्रति भी अपनायी। राम-रावण के द्वैरथ-युद्ध आरम्भ होने से पूर्व भी उन्होंने रावण से एक बाद सीता को लौटाने के लिये कहा - भो लङ्केश्वर दीयतां जनकजा रामः स्वयं याचते। कोऽयं ते मतिविभ्रमः स्मर नयं नाद्यापि किञ्चिद् गतम्।। 9/19 किन्तु राम में विनम्रता के साथ ही साथ पराक्रम भी चरम कोटि का है। चाहे विपक्षी कितना भी प्रबल और यशस्वी हो, राम पर युद्ध थोपता है तो राम उसका दमन करते हैं। उनकी नम्रता उनके शौर्य के तुल्य है, अप्रतिम है। इन्द्र कहते हैं - अमुना रामशरविद्यावैशारद्येन देवं त्रिपुरान्तकरं शङ्करमनुस्मारितोऽस्मि। 9/24-25

संक्षेप में राम के चरित्र में सभी आदर्श गुणों की एकत्र अवस्थिति है। वे विनम्र, धीर, कष्टसहिष्णु, परदुःखकातर और आदर्शों के रक्षक हैं। ये सभी गुण भारतीय संस्कृति में मान्य उदात्त जीवन मूल्यों से सम्बद्ध हैं। अपने नाटक के अन्तिम पद्यों में कविराज राजशेखर स्वयं उदात्त जीवन मूल्यों की अन्वित नायकपक्षीय पात्रों में आरेखित करते हैं - रामो दान्तदशाननः किमपरं सीता सतीष्वग्रणीः सौमित्रिः सदृशोऽस्तु कस्य समरे येनेन्द्रजिन्निर्जितः। किं ब्रूमो भरतं च रामविरहे तत्पादुकाराधकं शत्रुघ्नः कथितोऽग्रजस्य च गुणैर्वन्द्यं कुटुम्बं रघो।। बा.रा.10.102

राम ने रावण का वध किया है, अधिक क्या कहें सीता सतियों में श्रेष्ठ हैं और लक्ष्मण के समान कौन है जिसने युद्ध में मेघनाद को परास्त किया। भरत का क्या कहना है जो राम के विरह में उनकी पादुका की आराधना किये हैं, शत्रुघ्न की प्रशंसा तो अपने ज्येष्ठ भाई के गुणों से ही हो गयी। (इस प्रकार) रघु का वंश सर्वथा प्रशंसनीय है। राजशेखर बालरामायण के भरतवाक्य में कवियों को वैदिक संस्कृति के अनुरूप रचना करने की प्रेरणा भी देते हैं –

सम्यक् संसार विद्याविषद्मुपनिषद्भूतमर्थाद्भुतानां ग्रन्थन्तु ग्रन्थिबन्धं वचनमनुपतत्सूक्तिमुक्ताः सयुक्ताः। सन्तः संतर्पितान्तः करणमनुगुणं ब्रह्मणः काव्यमूर्ते -

स्तत्तत्वं सात्विकैष्च प्रथमपिषुनितं भावयन्तोऽर्चयन्तु।। बा.रा. 10.105 अभिनिवेशपूर्वक सूक्तिरूपी मोतियों से युक्त, सन्त लोग अद्भुत अर्थों के रहस्य स्वरूप, संसार के भय को दूर करने वाले ग्रंथिभूत वाक्यों की रचना करें तथा काव्यमूर्ति वेद के अन्तःकरण को प्रिय, अनुरूप तथा सात्विक कवियों द्वारा पहले से सूचित (निबद्ध) उस प्रसिद्ध तत्त्व का चिन्तन करते हुए प्रशंसा करें। नाटक के प्रारंभ में भी राजशेखर ने कवियों की सर्वोकृष्ट वाणी के लिए विद्याओं को अत्यन्त महत्त्व दिया है –

प्रसत्तेर्यः पात्रं तिलकयति यं सूक्तिरचना, य आद्यः स्वादूनां श्रुतिचुलुकलेह्येन मधुना। यदात्मानो विद्याः परिणमति यष्चार्थवपुषा, स गुम्फो वाणीनां कविवृषनिषेव्यो विजयते।। बा.रा. 1.1

निष्कर्ष

इस प्रकार राजशेखर के बालरामायण में भारतीय संस्कृति का जीवन्त रूप उपलब्ध है। नायक राम तथा उनसे सम्बद्धपात्रों में संस्कृति का स्वर आद्यन्त सुना जा सकता है। प्रतिपक्षी रावण का अहंकार उसकी विलासिता उससे सम्बद्ध पात्रों को कुप्रवृत्तियों को व्यापक स्तर पर प्रदर्षित कर कवि ने उन्हें व्यक्ति के सर्वनाष का हेतु बताया है। भले ही इस नाटक में रावण अधिक समय तक रंग मंच में दिखाई देता है, भले ही अधिक विशालकाय पद्यों की योजना के कारण बालरामायण नाटक से अधिक महाकाव्य लगता हो, अभिनेयता से अधिक पाठ्य लगता हो, किन्तु संस्कृति के प्रेरक रूप को सहृदयहृदय संवेद्य वर्णनों के साथ उद्भासित करने में यह एक अनूठी रचना है।

सन्दर्भ

1. बाल रामायण, गंगासागर राय
2. मनुस्मृति, आचार्य मनु
3. श्रीमद्भागवद्गीता, गीता प्रेस गोरखपुर
4. साहित्यानुसंधान बोध प्रविधि - प्रो. रहसविहारी द्विवेदी